EDU Journal of International Affairs and Research (EJIAR), ISSN: 2583-9993
Volume 4, Issue 2, April-June, 2025, Available at: https://edupublications.com/index.php/ejiar

अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस और हिंदी साहित्य में नारी अस्मिता

तुषार माहन[1], अजय[2]

[1]शोधार्थी, हिंदी विभाग, हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल केंद्रीय विशविद्यालय
[2]शोधार्थी, हिंदी विभाग, दिल्ली विशविद्यालय

हिंदी साहित्य का इतिहास बहुत ही पुराना है लेकिन जैसा कि विषय से स्पष्ट है कि अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के शुरुआत होने के बाद से हिंदी साहित्य में महिलाओं की क्या स्तिथि रही है अर्थात साहित्यकारों ने अपने लेखन में महिलाओं के जीवन के किन पहलुओ को उठाया है उसी के संदर्भ में चर्चा करना उचित होगा जैसा की हम जानते है महिला दिवस पहली बार वर्ष 1911 में क्लारा ज़ेटकिन द्वारा मनाया गया था, जो एक जर्मन महिला थीं। इस उत्सव की शुरुआत पूरे यूरोप और उत्तरी अमेरिका में श्रमिक आंदोलन के दौरान हुई थी। हालाँकि पहली बार वर्ष 1913 में यह समारोह 8 मार्च को मनाया गया था और तब से इसी दिन मनाया जाता है। वर्ष 1975 में संयुक्त राष्ट्र द्वारा पहली बार अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया। दिसंबर 1977 में संयुक्त राष्ट्र महासभा ने अपनी ऐतिहासिक और राष्ट्रीय परंपराओं के अनुसार सदस्य देशों द्वारा वर्ष के किसी भी दिन मनाए जाने वाले महिला अधिकारों और अंतर्राष्ट्रीय शांति के लिये संयुक्त राष्ट्र दिवस की घोषणा करते हुए एक प्रस्ताव अपनाया। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस, 2023 की थीम "डिजिटऑलः लैंगिक समानता के लिए नवाचार और प्रौद्योगिकी" है और इसका उद्देश्य लैंगिक मुद्दों कोप्रकाश में लाने में प्रौद्योगिकी के महत्त्व पर ज़ोर देना है। इसी से सम्बंधित लैंगिक समानता से सम्बंधित कुछ चिंताए है जिस पर ध्यान देना आवश्यक है - संयुक्त राष्ट्र महासचिव के अनुसार, लैंगिक समानता एक दूर का सपना बनता जा रहा है। संयुक्त राष्ट्र महिला (UN Women) का अनुमान है कि अगर स्थिति ऐसी ही बनी रहीं तो 300 वर्ष का और अधिक समय लगेगा।

संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, कानूनी बाधाओं ने 2.7 बिलियन महिलाओं को पुरुषों के समान नौकरी के अवसर प्राप्त करने से रोका है। 2019 तक सांसद महिलाएँ 25% से कम थीं। तीन में से एक महिला लिंग आधारित हिंसा का अनुभव करती है।

भारत के संदर्भ में:
सेंटर फॉर मॉनीटरिंग इंडियन इकोनॉमी (CMIE) के आँकड़ों के अनुसार, दिसंबर 2021 तक पुरुष श्रम बल भागीदारी दर (LFPR) 67.4% थी, जबकि महिला LFPR 9.4% था। यहाँ तक कि अगर कोई विश्व बैंक से डेटा प्राप्त करता है, तो भारत की महिला श्रम बल भागीदारी दर लगभग 25% है, जबकि वैश्विक औसत 47% है।

वैश्विक लैंगिक अंतराल सूचकांक (जो लैंगिक समानता की दिशा में प्रगति को मापता है) में भारत वर्ष 2022 में 135वें स्थान पर खिसक गया।

हालाँकि हाल ही में विश्व आर्थिक मंच (WEF) ने अपनी भविष्य की रिपोर्ट में देशों को रैंक प्रदान करने के लिये पंचायत स्तर परमहिलाओं की भागीदारी को ध्यान में रखते हुए वैश्विक लैंगिक अंतराल रिपोर्ट के मानदंड में बदलाव करने पर सहमति व्यक्त की है। इससे वैश्विक स्तर पर भारत की स्थिति बेहतर होगी। अंतर-संसदीय संघ (IPU), जिसमें भारत एक सदस्य है, द्वारा संकलित आँकड़ों के अनुसार लोकसभा के कुल सदस्यों में से महिलाएँ केवल 14.44% का प्रतिनिधित्त्व करती हैं।

अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) द्वारा 2018 में किये गए एक अध्ययन के अनुसार, भारत की 95% से अधिक कामकाज़ी महिलाएँ अनौपचारिक श्रमिक हैं, जो बिना किसी सामाजिक सुरक्षा के गहन श्रम, न्यूनतम वेतन,

अत्यधिक अनिश्चित रोज़गार/परिस्थितियों में काम करती हैं। इन सभी आकड़ो पर ध्यान देने के पश्चात स्त्रियों की स्थिति की बखूबी समझा जा सकता है इसी के सन्दर्भ इन सभी पहलुओं को देखते हुए हम कह सकते है कि जिस समय अन्तराष्ट्रीय महिला दिवस की शुरुआत हुई वह समय हिंदी साहित्य के इतिहास में दुर्वेदी युग के नाम से जाना जाता है, इस समय के प्रमुख साहित्यकारों में मुंसी प्रेमचन्द, जय शंकर प्रसाद, चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, महावीर प्रसाद द्वेदी जिनके नाम पर युग को जाना जाता है आदि इन सभी साहित्यकारों ने अपनी लेखनी के माध्यम से बहुत नाम कमाया और जैसा कि वह समय भारतीय स्वतन्त्रा संग्राम का समय भी था ऐसी स्थिति में साहित्य लिखना मतलब अपने समाज के हर पहलुओ को देखना था जिसमे स्त्री का होना भी साहित्य की एक उपलब्धि थी, प्रेमचन्द ने अपने शुरुआती कहानियों और उपन्यासों में स्त्री को आदर्शवादी स्त्री के रूप में चित्रित करने का प्रयास किया है उनका प्रसिद्ध उपन्यास गोदान जिसमे उन्होंने जिस तरह से धनिया और मालती को दिखाया है वो भी भारतीयता और पश्चिम सभ्यताका प्रतिनिधित्व करती दिखाई पड़ती है, 'वहीं बड़े घर की बेटी' जैसी कहानियो में प्रेमचंद ने स्त्री को आदर्श रूप में प्रकट किया है, जिसमे की स्त्री द्वारा परिवार की यातना को सहना ही उसका धर्म है, परिवार से किसी प्रकार का कोई विद्रोह भी है तो अंत तक आते आते वह एक आदर्श स्थापित कर देते है जहां स्त्री अपने परिवार के भलाई के लिए झुक जाती है। वही दूसरी तरफ अगर जयशंकर प्रसाद की बात करे तो उनकी महिला पात्र प्रगतिशील है, उनमे देश के प्रति एक लगाव है और वह राष्ट्रीय के लिए कुछ भी करने को तैयार है, जयशंकर प्रसाद के स्त्री पात्रो का महत्व इसलिए भी है कि वह अपने देश की भलाई के लिए अपने प्रेम तक को छोड़ सकती है। जैसा कि प्रसाद ने अपने साहित्य में देश की प्रगतिशील विचारधारा को प्रकट करते हुए दिखाया हुआ है जहां स्त्री कहती हैं -

अरुण यह मधुमय देश हमारा जहां पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा ततपश्चात अगर हम आगे देखे तो भगवतीचरण वर्मा के 'भूले बिसरे चित्र' में भी भारतीय नारी की जागरूकता का चित्रण है। गंगा पढ़ी लिखी प्रगतिशील नारी है जो पति तथा परिवार वालो के दुर्वव्यवहार से रुष्ट होकर सम्बन्धो को तोड़ लेती है तथा नॉकरी करके आत्मनिर्भर जीवन बिताना चाहती है।

धीरे धीरे हिंदी उपन्यासों में नारी का सतीत्व और देवित्व के कठघरे से निकाल कर मानव रूप में प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया जाने लगा है। इस प्रकार से जिस महिला विकास और प्रगतिशील विचार धारा की बात अंतराष्ट्रीय महिला दिवस का उद्देश्य है उसकी पुष्टि इस युगके कई प्रमुख सहियकारो ने की है। बीते अन्तराष्ट्रीय महिला दिवस पर कई व्यक्ताओ ने अपने विचारों को सांझा करते हुए कहा कि -नारी, यह कोई समान्य शब्द नहीं बल्कि एक ऐसा सम्मान हैं जिसे देवत्व प्राप्त हैं. नारियों का स्थान वैदिक काल से ही देव तुल्य हैं इसलिए नारियों की तुलना देवी देवताओं और भगवान से की जाती हैं. जब भी घर में बेटी का जन्म होता हैं, तब यही कहा जाता हैं कि घर में लक्ष्मी आई हैं. जब घर में नव विवाहित बहु आती हैं, तब भी उसकी तुलना लक्ष्मी के आगमन से की जाती हैं. क्या कभी आपने कभी सुना हैं बेटे के जन्म कर ऐसी तुलना की गई हो? कि घर में कुबेर आये हैं या विष्णु का जन्म हुआ हैं, नहीं. यह सम्मान केवल नारी को प्राप्त हैं जो कि वेदों पुराणों से चला आ रहा हैं जिसे आज के समाज ने नारी को वह सम्मान नहीं दिया जो जन्म जन्मान्तर से नारियों को प्राप्त हैं.

हमेशा ही नारियों को कमजोर कहा जाता हैं और उन्हें घर में खाना बनाकर पालन पोषण करने वाली कहा जाता हैं, उसे जन्म देने वाली एक अबला नारी के रूप में देखा जाता हैं और यह कहा जाता हैं कि नारी को शिक्षा की आवश्यक्ता ही नहीं, जबकि जिस भगवान को समाज पूजता हैं वहां नारी का स्थान भिन्न हैं. माँ सरस्वती जो विद्या की देवी हैं वो भी एक नारी हैं और यह समाज नारी को ही शिक्षा के योग्य नहीं समझता. माँ दुर्गा जिसने राक्षसों का वध करने के लिए जन्म लिया वह भी एक नारी हैं और यह समाज नारी को अबला समझता हैं. कहाँ से यह समाज नारी के लिए अबला, बेचारी जैसे शब्द लाता हैं एवम नारि को शिक्षा के योग्य नहीं मानता, जबकि किसी पुराण, किसी वेद में नारि की वह स्थिती नहीं जो इस समाज ने नारी के लिए तय की हैं. ऐसे में जरुरत हैं महिलाओं को अपनी शक्तिसमझने की और एक होकर एक दुसरे के साथ खड़े होकर स्वयम को वह सम्मान दिलाने की, जो वास्तव में नारी के लिए बना हैं.

वूमेन डे प्रति वर्ष 8 मार्च को मनाया जाता हैं. लेकिन आज जो औरत की हालत हैं वो किसी से नहीं छिपी हैं और ये हाल केवल भारत का नहीं, पुरे दुनियाँ का हैं. जहाँ नारि को उसका ओदा नहीं मिला हैं. एक दिन उसके नाम कर देने से कर्तव्य पूरा नहीं होता. आज के समय में नारी को उसके अस्तित्व एवम अस्मिता के लिए प्रतिपल लड़ना पड़ता हैं. यह एक शर्मनाक बात हैं कि आज हमारे देश में बेटी बचाओ जैसी योजनाये हैं, आज घर में बेटी को जन्म देने के लिए सरकार द्वारा दबाव बनाया जा रहा हैं क्या बेटियाँ ऐसा जीवन सोचकर आती हैं जहाँ उसके माँ बाप केवल एक डर के कारण उसे जीवन देते हैं. समाज के नियमो ने समाज में कन्या के स्थान को कमजोर किया हैं जिन्हें अब बदलने की जरुरत हैं. आज तक जो हो रहा हैं उसे बदलने की जरुरत हैं जिसके लिए सबसे पहले कन्या को जीवन और उसके बाद शिक्षा का अधिकार मिलना जरुरी हैं तब ही इस देश में महिला की स्थिती में सुधार आएगा.

अगर एक आदमी को शिक्षित किया जाता हैं तब एक आदमी ही शिक्षित होता हैं लेकिन जब एक औरत को शिक्षित किया जाता हैं तब एक पीढ़ी शिक्षित होती हैं. - ब्रिधैम यंग

इसी के संदर्भ में आगे बढ़ते हुए अगर हम मैथलीशरण गुप्त के काव्य को देखे तो पाते ही कि उन्हीने भी स्त्री की अस्मिता की बात अपने काव्य में कुछ इस प्रकार करते है –

अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी ।
आँचल में है दूध और आंखों में पानी।।

मैथलीशरण गुप्त ने 'साकेत', यशोधरा आदि काव्य के माध्यम से स्त्री को अपने साहित्य में स्थान देते हैं साकेत में गुप्त जी ने लक्ष्मण की पत्नी उर्मिला का विरह चित्रण किया है और सन्देश दिया है कि सीता जी भी राम के साथ वनवास पे गई थी पर उनका पति तो उनके साथ ही था लेकिन उर्मिला को तो 14 वर्षो तक अपने पति के वगेर रहना पड़ा इस तरह से स्त्री संवेदना की बात गुप्त जी के साहित्य में देखने को मिलती हैं।

हिंदी साहित्य में कुछ ऐसे भी साहित्यकार हुए है जिन्होंने स्त्रियों की मनोदशा को आधार बना कर साहित्य लिखा है जिनमे प्रमुख है जैनेन्द्र, उनके सभी स्त्री पात्र मानसिक घात- प्रतिघात में परिचालित होते से दिखते है । सुनीता, कल्याणि आदि सभी स्त्री पात्रो का अन्तर्द्वद चरम पर है। जैनेंद्र अपने उपन्यासों में आंतरिक जगत का विश्लेषण करते हुए स्त्री की समस्याओं व उसकी अस्मिता को भिन्न रूप में उपस्थित करते है। इसी तरह सुरेंद्र वर्मा के 'मुझे चाँद चाहिये' में एक कस्बे की लड़की एन.एस. डी. में प्रवेश पाती है और अभिनेत्री बनती है। जैनेन्द्र का 'दशार्क' स्त्री की सशक्तता का समर्थन करता है। वही त्यागपत्र की मृणाल जहां आत्मपीड़न की शिकार है वहीं दशार्क की रंजना टूटती नही है अपना रास्ता खुद बनाती है। इन सभी साहित्यिक रचनाओं से यह स्पष्ट होता है कि साहित्यकारों ने भी स्त्रीओ को प्रगतिशीलता प्रदान की है और अपने अस्तित्व की लड़ाई खुद लड़ने की दिशा में आगे बढाया है नाकि की किसी पर निर्भर होने की दिशा में। स्त्रीओ की प्रगति और उनके जीवन मे विकाश कीदिशा में कई महिला सहित्यकारो ने भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है जिनमे प्रमुख है- कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी, पदमा सचदेव, मुदुला गर्ग, कात्यायनी, उषा प्रियंवदा, मृणाल पांडे, चित्रा मुदगुल, मैत्रयी पुष्पा, नासिरा शर्मा, प्रभा खेतान, गीतांजलि श्री, आदि इन महिला साहित्यकारों ने स्त्री लेखन के माध्यम से स्त्री विमर्श को आगे बढ़ाने में अपनी भूमिका निभाई है।

इन सभी विषयों पर आज भी बहुत आवश्कता है कि बात हो, विमर्श हो जिससे कि स्त्रीओ को भी समान अधिकार प्राप्त हो सके जैसा कि देश - विदेश का माहौल है कि पिछले एक साल के दौरान अफ़ग़ानिस्तान, ईरान, यूक्रेन और अमरीका जैसे कई देशों में महिलाएं अपने अपने देशों में युद्ध, हिंसा और नीतिगत बदलावों के बीच अपने अधिकारों की लड़ाई लड़ती रही हैं. अफ़ग़ानिस्तान में तालिबान की सत्ता में वापसी ने मानव अधिकारों के मामले में तरक़्क़ी को बाधित कर दिया है. क्योंकि महिलाओं और लड़कियों को उच्च शिक्षा हासिल करने से रोक दिया गया गया है. उनके घर से बाहर ज़्यादातर काम करने पर और किसी पुरुष संरक्षक के बगैर लंबी दूरी का सफ़र करने पर पाबंदी लगा दी गई है.

तालिबान ने महिलाओं को हुक्म जारी किया है कि वो घर से बाहर या दूसरे लोगों के सामने अपना पूरा चेहरा ढक कर रखें. ऐसी स्तिथि में अन्तराष्ट्रीय महिला दिवस के माध्यम से जरूरत है कि उद्देश्यों को और अधिक बढ़ाया जाए और उसपर डट कर कार्य किया जाए जैसा कि स्पष्ट है आज स्त्री सशक्तिकरण के जो भी प्रश्न समाज मे प्रकट हो रहे है, साहित्य उनसे निरपेक्ष नही रह सकता। हर हाल में स्त्रियों के बलिकरण के प्रश्न बदलते रहे है। आज स्त्रियां लिंगभेद, महिलाओ पर हिंसा को रोकना, निजी कानूनों में संशोधन, महिलास्वास्थ्य तथा आर्थिक दशा आदि में मुद्दों से जूझ रही है। स्त्रीओ को मुख्य धारा में जोड़ने के लिए जो भी आंदोलन हुए उसमे महिलाओ में भी अपना योगदान दिया। आज साहित्य में स्त्रीओ के विषय मे जो भी मुद्दे उठ रहे है कहीं न कहीं वह विचार विमर्श का विषय बनते जा रहे हैं। इस प्रकार से हम देख पाते है कि अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस से लेकर अब तक हिंदी साहित्य में जो भी स्त्री विषयक सबंधी रचना आई है उसका अपना एक महत्व है और साहित्यकारो ने किसी भी स्तर पर स्त्रीओ को अपने रचना मे स्थान दिया है, यही अन्तराष्ट्रीय महिला दिवस की उपलब्धि हाई की उनकी उद्देश्यों की पूर्ति कहीं न कहीं साहित्य के माध्यम से भी हो रही है, महिलाओ के प्रश्नों को साहित्य में स्थान दिया जा रहा है, जो कि आज के बड़े बड़े मंचो पर विमर्श का विषय बनते जा रहे है।

संदर्भ सूची

[1]. गोदान - मुंसी प्रेमचन्द
[2]. चन्द्रगुप्त नाटक - जयशंकर प्रसाद
[3]. त्यागपत्र - जैनेन्द्र
[4]. साकेत - मैथलीशरण गुप्त
[5]. यशोधरा - मैथलीशरण गुप्त
[6]. स्त्री विमर्श और हिंदी साहित्य रजनी पाठक
[7]. अम्बेडकरवादी स्त्री चिंतन - तेज सिंह
[8]. स्त्री अस्मिता की खोज हिसाए कोमात्सु
[9]. विकिपीडिया
[10]. दृष्टि आईएएस लेख